International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 88-89

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 88-89
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-03-2017
Accepted: 20-04-2017

डॉ0 योगेन्द्र कुमार
असि0 प्रोफेसर एम0ए0
(संस्कृत एवं दर्शनाशास्त्र),
नेट–संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र डी.
फिल. ने.पी.जी. कालेज, बड़हलगंज,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 योगेन्द्र कुमार
असि0 प्रोफेसर एम0ए0
(संस्कृत एवं दर्शनाशास्त्र),
नेट–संस्कृत एवं दर्शनशास्त्र डी.
फिल. ने.पी.जी. कालेज, बड़हलगंज,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

शत्रुकारण और शत्रुज्ञान के साधन

डॉ0 योगेन्द्र कुमार

सारांश
शत्रु का लक्षण है अपकार– रिलक्षणम् अर्थात् अपकार करने वाला शत्रु है, शत्रु चिन्तन में आवश्यक पक्ष हैं शत्रु उत्पन्न होने के कारण का ज्ञान और शत्रु विषयक ज्ञान प्रप्ति के समाधन जिनसे शांति स्थापना में सहायता मिलती है।

कुट शब्दः शत्रुकारण, शक्ति, स्वार्थ, स्त्रीजन्य शत्रुता, वास्तुज शत्रुता, वाग्ज शत्रुता, सापत्न शत्रुता, अपराधज शत्रुता, असहनीशलता, प्रत्यक्ष अनुमान व उपमान व शब्द।

प्रस्तावना
मित्रता एवं शत्रुता के रूप तो बादलों के समान क्षण–क्षण में बदलते रहते हैं, व्यक्ति एक ही दिन में मित्र एवं शुत्र दोनों रूपों को धारण करता है।[1] कोई व्यक्ति कारण से ही मित्र होता है और कारण से ही शत्रु।[2]
शत्रुता विषयक चतुष्टकोटियों में 'शत्रु कारण' द्वितीय कोटि है। चूँकि शत्रु एक समस्या है और समस्या बिना कारण के नहीं होती है। अतः शत्रु समस्या भी सकारण है। अतः इसके कारणों का विश्लेषण जरुरी है क्योंकि बिना कारणों के ज्ञान एवं शत्रु विषयक ज्ञान और उसके साधनों के ज्ञान के बिना उसकी चिकित्सा असम्भव है। अतः शत्रु के कारणों व उसके साधनों का विश्लेषण जरूरी है। सर्वप्रथम शुत्र कारणों को नीचे वर्णित किया जा रहा है–

1. शक्ति ही शत्रुता–मित्रता का कारण है।
   नास्ति जात्या रिपुर्नाम मित्रं नाम न विद्यते।
   सामर्थ्ययोगाज्जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।।[3]

वस्तुतः न तो कोई किसी का मित्र है, न कोई किसी का शत्रु है; आवश्यक शक्ति के योग से मित्र एवं शत्रु हो जाते हैं। अर्थात् शत्रुता का कारण शक्ति है।

2. स्वार्थ शत्रुता का कारण है–
   नास्ति मैत्री स्थिरा नाम न च ध्रुवमसौहृदम्।
   अर्थयुक्त्यानुजायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।।[4]

अर्थात् मित्रता न तो स्थिर वस्तु है और न तो शुत्रता नित्य होती है। वस्तुतः स्वार्थ के कारण ही मित्र और शुत्र पैदा होते हैं।

3. वैरं पंचसमुत्थानं तच्च बुध्यन्ति पण्डिताः।
   स्त्रीकृतं वास्तुजं वाग्जं ससापत्नापराधजम्।।[5]

अर्थात् शत्रु पाँच कारणों से बनते हैं। इस तथ्य को विद्वान पुरुष अच्छी तरह से जानते हैं।
(1) स्त्रीजन्य शत्रुता, (2) वास्तुज शत्रुता (3), वाग्ज शत्रुता, (4) सापत्न शत्रुता (5) अपराधज शत्रुता।

स्त्रीजन्य शुत्रता
जो शत्रुता स्त्री के कारण होती है, जैसे– राम व रावण में शुत्रता का कारण सूर्पणखा का अपमान व सीता का अपहरण, रुक्मि और श्रीकृष्ण में रुक्मिणी के अपहरण के कारण शत्रुता, पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द में संयोगिता के अपहरण के कारण शत्रुता हुई।

वास्तुजा शत्रुता

गृहं क्षेत्रमारामः सेतुबन्धस्तटाकमाधारो वा वास्तुः।[6]

अर्थात् घर, खेत बाग–बगीचे, सीमाबन्ध तालाब और बाँध आदि सब वास्तु कहलाते हैं। इनके कारण उत्पन्न होने वाली शत्रुता वास्तुज शत्रुता है। इसका उदाहरण है– देवों एवं असुरों की शत्रुता, कौरवों एवं पाण्डवों की शत्रुता।

वाग्ज शत्रुता

जो कठोर वाणी से उत्पन्न होती है। जैसे द्रोपदी एवं दुर्योधन की शत्रुता, जो कि द्रोपदी की इस वाणी से जन्य थी कि अन्धे के अन्धे होते हैं।

ससापत्न शत्रुता

वह जो एक ही वस्तु के विषय में प्रतिस्पर्धा के कारण होती है जैसे– द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर काल से शीत युद्ध की समाप्ति 1991 के पूर्व तक अमरिका और रुस की शत्रुता।

अपराधज शुत्रता

जो शुत्रता अपराध के कारण होती है जैसे जरासन्ध एवं श्रीकृष्ण की शत्रुता जो कि कंस के वध के कारण हुई थी।

असहनशीलता शत्रुता का कारण है–
नोच्छ्रितं सहते कश्चित् प्रक्रिय वैरकारिका।[7]

अर्थात् किसी की ऊँची स्थिति को ईर्ष्यावश सहन न करना भी शत्रुता उत्पन्न करने की प्रक्रिया है।

इस तरह स्वार्थ, शक्ति, स्त्री, वास्तु, वाणी, सपत्नता, अपराध तथा ऊँची स्थिति को प्रति असहिष्णुता शत्रु बनने के कारण हैं। उनमें तो अपराध एवं वास्तु की वजह से से तो नेशन में आन्तरिक शत्रुता बढ़ती है, जिसके शमन के लिए ही आचार्य चाणक्य ने धर्मस्थीय व कण्टकशोधन न्यायालयों की व्यवस्था दिया। स्वार्थ एवं शक्ति सम्पन्नता अन्तर्राष्ट्रिय दो देशों या उससे अधिक देशों के बीच शत्रुता का प्रमुख कारण है, जिसके निपटारे के लिए यू.एन.ओ. जैसा संगठन बनाया गया है।

शत्रु ज्ञान के साधन

अब शत्रु विषयक ज्ञान और उस ज्ञान के साधन क्या हैं इसका विवेचन प्रसङ्ग प्राप्त है।

असाधुः साधुतामेति साधुर्भवति दारुणः।
अरिश्च मित्रं भवति मित्रं चापि प्रदुष्यति।।
अनित्यचित्ताः पुरुषः तस्मिन् को जातु विश्वसेत्।[8]

अर्थात् दुष्ट सज्जन हो जाता है, सज्जन भयंकर हो जाता है। अरि मित्र? हो जाता है और मित्र भी दुषित हो जाता है। पुरुष अत्यन्त अस्थिर चित्त वाले होते हैं। अतः उन पर भला कौन विश्वास करे। 'अवसर आने पर कितने ही मित्र शत्रु रूप हो जाते हैं और कितने ही शुत्र मित्र बन जाते हैं और परस्पर संधि कर लेने के पश्चात् जब वे काम क्रोध के वशीभूत हो जाते हैं तो यह समझना असम्भव हो जाता है कि वे मित्रभाव से युक्त है या शत्रुभाव से।[9] अतः भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा–

वेदितव्यानि मित्राणि विज्ञयाश्चापि शत्रवः।
एतत् सुसूक्ष्मं लोकेऽस्मिन् दृश्यते प्राज्ञसम्मतम्।[10]

चूँकि शत्रु को जानना चाहिए अतः शत्रु के विषय में कैसे जानना चाहिए और जानने के हमारे पास क्या साधन है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए भीष्म ने युधिष्ठिर को समझाया है कि–

प्रत्यक्षेणानुमानेन तथौपम्पागमैरपि।
परीक्ष्यास्ते महाराज स्वे परे चैव नित्यशः।।[11]

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र का निष्कर्ष है कि राजनीति में शत्रु उत्पन्न होने के कारण शक्ति, स्वार्थ, असहिष्णुता, स्त्री वास्तु, वाणि, प्रतिस्पर्धा और अपराध है। शत्रु को जानने के साधन प्रत्यक्ष अनुमान उपमान, और आगम है। इन साधनों से निश्चित रूप से मित्र शत्रु का ज्ञान करते रहना चाहिए।

संदर्भ स्रोत

1. महाभारत शान्ति पर्व 138–160
2. वही, 138.154
3. वही, 138.139. (2) वि.ध.पु. 2.145.14
4. महाभारत शान्ति पर्व 138.141
5. वही, 138.142, अग्निपुराण 249.19
6. वैरं पंचसमुत्थानं तच्च बुध्यन्ति पण्डिताः।
7. स्त्रीकृतं वास्तुजं वाग्जं ससापत्नापराधजम्।।
8. अर्थशास्त्र
9. महाभारत शान्ति पर्व, 80.59
10. वही, 80.8.,9
11. वही, 138–138
12. शत्रुरुपा हि सुहृदो मित्ररुपाश्च शत्रतः।
13. संधितास्ते न बुद्धयन्ते कामक्रोधवशंगताः।।
14. वही, 138.137
15. वही, 56.41